'पुराना किला'-भारतीय इतिहास की उत्पत्ति का द्योतक

हुमायुं द्वारा निर्मित और शेर शाह द्वारा बनाए गए स्मारकों से युक्त दिल्ली-मथुरा-आगरा मार्ग पर नई दिल्ली में यमुना के तट पर स्थित 'पुराना किला' उस एक टीले पर स्थित है जिसकी इस सदी के आरंभ तक इंद्रप्रस्थ गांव के तौर पर, महाभारत काल में पांडवों की राजधानी इंद्रप्रस्थ के रूप में, पहचान की गई है.

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को पुराने किले पर जारी खुदाई के दौरान 12वीं सदी की भगवान विष्णु की मूर्ति और कई अन्य कलाकृतियां प्राप्त हुई हैं. 18 सें.मी. लंबी पत्थर की मूर्ति प्राचीन राजपूत काल की है. शंख और चक्र से युक्त भगवान विष्णु की ये मूर्ति पुराना किला के खुदाई स्थल के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में प्राप्त हुई है. लेकिन पूर्व भारत कला भवन संग्रहालय के निदेशक डी.पी. शर्मा, जो कि मूर्तियों के काल का मूल्यांकन करने के विशेषज्ञ हैं, का इस दावे पर भिन्न मत है. डॉ. शर्मा का मानना है कि ये मूर्ति मुगल बादशाह अकबर के शासनकाल के दौरान 16वीं सदी की है. विभिन्न ऐतिहासिक रिकार्डों के अनुसार अकबर की धर्मनिरपेक्षता की प्रामाणिकता स्थापित हो चुकी है. खुदाई स्थल से इस मूर्ति के प्राप्त होने से इस तथ्य को बल मिलता है कि अकबर हिंदू देवी देवताओं का संरक्षण करते थे.

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने लगभग चार दशकों के बाद पिछले महीने यह खुदाई आरंभ की. किले की पहली बार खुदाई 1955 में मशहूर पुरातत्वज्ञ बी.बी. लाल ने की थी. इसके बाद भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने भी 1969-73 के दौरान खुदाई कार्य करवाया. पहले की खुदाइयों से ईसा पूर्व तीसरी सदी की कलाकृतियों प्रकाश में आई थीं.

यह स्थल मौर्य काल से लेकर मुगल काल तक लगातार सांस्कृतिक धरोहर से भरपूर रहा. पिछले महीने हुए खोज़ कार्य से इस तथ्य को बल मिला कि ये गुप्त और कुषाण काल के दौरान अधिवास क्षेत्र रहा है.

1969-70 और 1972-73 के बीच भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने यहां बड़े पैमाने पर खुदाई कार्य करके आठ कालों के अवशेष ढूंढे हैं. काल 1-मौर्य (चौथी - तृतीय सदी ई.पू.), काल 2-सुनगा (दूसरी-पहली सदी ई.पू.), काल 3-शक-कुषाण (पहली-तीसरी सदी एडी), काल 4-गुप्त (चौथी-छठी सदी), काल 5-गुप्त पश्चात (सातवीं-नौंवी सदी), काल 6-राजपूत (10वीं-12वीं सदी), काल 7-सल्तनत (13वीं-15वीं सदी), और काल 8-मुगल (16वीं-19वीं सदी)

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के दिल्ली सर्कल के प्रमुख वसंत स्वर्णकार का कहना है कि वर्तमान खुदाई से कुषाण काल (पहली सदी बीसी) के बर्तन और खिलौनों के साथ-साथ मध्यकाल के तांबे के सिक्के, और राजपूत तथा कुषाण काल की पशुओं और मनुष्यों की टेराकोटा की मूर्तियां प्राप्त हुई हैं.

खुदाई कार्य ये जांचने और प्रतिष्ठापित करने के लिये संचालित किया जा रहा है कि क्या कभी कोई चित्रित भूरे रंग के बर्तन होते थे. पुराना किले का टीला मौर्य काल (तीसरी सदी बीसी) से मुगल काल तक लगातार संस्कृति का अधिवास बना रहा है. ऐसा विश्वास किया जाता है कि ये महाभारत से संबंधित इंद्रप्रस्थ का इलाक़ा था.

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के दल के साथ खुदाई स्थल पर ''पुरातत्व संस्थान'', भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संचालित एक संस्थान, के 18 छात्र भी काम कर रहे हैं. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा पुनः खुदाई करने के पीछे का एक कारण ये भी है कि एजेंसी खुदाई क्षेत्र को शेडों से ढककर उन्हें विभिन्न सांस्कृतिक धरोहरों को दर्शाने के वास्ते खुला रखकर उसी स्थान पर एक संग्रहालय की तरह प्रस्तुत करना चाहती है. इस बात को ध्यान में रखते हुए कि दिल्ली यूनेस्को की 'विश्व धरोहर शहर' की सूची में स्थान पाने की होड़ में लगी है, ये संग्रहालय दिल्ली के प्रतिष्ठित स्थलों में एक मूल्यवान स्थल के तौर पर जुड़ जायेगा.